।। जय गुरु नाना ।। ।। श्री महावीराय नमः ।। ।। जय गुरु राम ।।

राम चमक रहे भानु समाना

# उत्क्रांति मार्गदर्शिका

DEVOTE FOR SANGH

प्रकाशक

**श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ**

केन्द्रीय कार्यालय : समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, जैन पी.जी. कॉलेज के सामने
गंगाशहर, बीकानेर (राज.) फोन: 0151-2270261-62
वेबसाईट: www.sadhumargi.com, absjsamtayuvasangh.com
ई-मेल: ho@sadhumargi.com, samtabhawan21@gmail.com

# उत्क्रांति परिवार नियमावली

1. निमंत्रण पत्रिका का सादगीपूर्ण होना।
2. संगीत संध्या का आयोजन नहीं करना।*
3. विवाह व अन्य सामूहिक कार्यक्रम में भोजन में खाद्य पदार्थ 31 तक ही सीमित रखना।
4. विवाह एवं अन्य सामूहिक कार्यक्रम में जमीकंद का प्रयोग नहीं करना।
5. विवाह एवं अन्य सामूहिक कार्यक्रम में आवश्यकता हो तो ही युवती/महिला वेटर को बुलवाएँ और वह भी शालीनतापूर्ण वस्त्र में।
6. विवाह एवं अन्य सामूहिक कार्यक्रम में सचित्त फूल (वरमाला के अलावा) का प्रयोग नहीं करना।
7. विवाह एवं अन्य सामूहिक कार्यक्रम के आयोजन नॉन वेज होटल में नही करना।
8. नॉनवेज पदार्थ के नाम से वेज पदार्थ भी नहीं रखना एवं जानवरों के शरीर के आकार से कटे हुए फल फ्रुट नहीं रखना।
9. शादी विवाह में किसी भी प्रकार के दहेज की मांग नहीं करना।
10. विवाह एवं अन्य सामूहिक कार्यक्रम में पटाखें (आतिशबाजी) का प्रयोग नहीं करना।
11. विवाह एवं अन्य सामूहिक कार्यक्रम में सड़क पर नाच गान नहीं करना।
12. विवाह एवं अन्य सामूहिक कार्यक्रम में कॉकटेल (एल्कोहल) काउण्टर नहीं लगाना।

---

* पारिवारिक जन, महिलाओं व बच्चों की उपस्थिति में नृत्य-संगीत का छोटा कार्यक्रम यदि किया जाए तो बाधा नहीं परन्तु निम्न नियमों का पालन आवश्यक हैं:-

(a) निमंत्रण पत्र में संगीत कार्यक्रम का उल्लेख न हो।

(b) किसी भी प्रकार के बाह्य एंकर/कोरियोग्राफर/डांसर की सहायता नहीं ली जाए।

(c) इस कार्यक्रम में सामान्य जन, सामाजिक एवं व्यावसायिक संबंधित जन आमंत्रित नहीं हो।

# प्रस्तावना

समाज में शादी-विवाह में तेजी से बढ़ रहे आडम्बर और दिखावे के चलते बहुत सी बुराइयों और तकलीफों ने पीछे के दरवाजे से भीतर तक प्रवेश कर लिया है। इन पर समय रहते ध्यान नहीं दिया गया तो भविष्य में इसके गंभीर परिणाम भुगतने पड़ सकते है। समाज के अग्रणी कहे जाने वाले एक वर्ग ने अपनी सम्पन्नता और झूठी शान को प्रदर्शित करने के लिए, इन आयोजनों को एक प्लेटफार्म बना लिया है। उन्हें अपनी निजी स्वार्थ के कारण इससे होने वाली समस्याएं दिखाई नहीं पड़ रही है या वे देखना ही नहीं चाह रहे हैं। समाज का एक बड़ा वर्ग उनका अनुसरण करके पीसा जा रहा है। उसकी जीवन भर की कमाई इन 2 दिनों में स्वाहा होती जा रही है। इन बिना वजह के खर्चों की भरपाई करने उसका पूरा जीवन खप रहा है। कब तो वह अपने परिवार को समय दे और कब अपनी आत्मा के कल्याण के लिये कुछ समय निकाले।

परम पूज्य **आचार्य श्री 1008 श्री रामलाल जी म.सा.** ने इसे महसूस किया और बैंगलोर वर्षावास के दौरान इन आडम्बरों, कुरीतियों और झूठे दिखावे को दूर करने हेतु प्रेरणादायी प्रवचन फरमाया। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ ने अविलम्ब इसे एक जन आंदोलन का स्वरूप देने का संकल्प लिया। इसे 'उत्क्रांति' का नाम दिया गया। इसकी नियमावली बनाई गई और प्रारंभ हुआ इस मुहीम में अपने आपको शामिल करने का सिलसिला। देखते ही देखते थोड़े से समय में लगभग 5000 से अधिक परिवारों ने संकल्प पत्र भर दिया। अनेक गांव के गांव पूरी तरह इस आंदोलन से जुड़ गए।

कालांतर में जब व्यवहार में इनके पालन की बारी आई तब अनेक प्रश्न, शंकाए, कठिनाइयों का सामना करना पड़ा जो कि अवश्यसंभावी ही था। समय-समय पर उनका निराकरण मुख पत्रिका 'श्रमणोपासक' के माध्यम से भी किया गया। कुछ व्यवहारिक दिक्कतों के चलते आवश्यक संशोधन भी किए गए। परन्तु एक सम्पूर्ण मार्गदर्शिका की आवश्यकता पिछले कुछ समय से महसूस की जा रही थी ताकि समय समय पर उठने वाले प्रश्नों का समाधान उपलब्ध हो।

अत: 'उत्क्रांति मार्गदर्शिका' उन सभी परिवारों, जिन्होंने संकल्प लिया है और वे जो लेना चाहते हैं को सादर समर्पित है। सन् 2020 जब हम स्मृति शेष पूज्य आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. की जन्म शताब्दी मना रहे होंगे तब तक कोई भी साधुमार्गी परिवार 'उत्क्रांति' का संकल्प पत्र भरने से न छूटे, इसी लक्ष्य के साथ हम सभी आगे बढ़ रहे हैं।

**निवेदक :**


**संदीप कुमार देशलहरा**
राष्ट्रीय परामर्श दाता - उत्क्रांति
श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ
दुर्ग (छत्तीसगढ़) मो. 9827191201

**हितेश सिपाणी**
राष्ट्रीय संयोजक उत्क्रांति
श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
सूरत (गुजरात) मो. 9374689000

**श्री जयचन्दलाल डागा**
राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ

**श्री धर्मेन्द्र आंचलिया**
राष्ट्रीय महामंत्री
श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ

**श्री जसकरण सुराणा**
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन संघ

**श्रीमती प्रभा देशलहरा**
राष्ट्रीय अध्यक्षा
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति

**श्रीमती सुरेखा सांड**
राष्ट्रीय महामंत्री
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति

**श्रीमती सुमन सुराणा**
राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति

**श्री अतुल पगारिया**
राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ

**श्री नवरत्न ओस्तवाल**
राष्ट्रीय महामंत्री
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ

**श्री सुमित बोथरा**
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ

# अनुक्रमणिका

| | | |
|---|---|---|
| गुरुदेव का चिंतन – ''एक उत्क्रांति'' | : | 03 |
| उत्क्रांति क्या है ? एवं उत्क्रांति के मूल उद्देश्य | : | 05 |
| उत्क्रांति क्यों आवश्यक है ? इसके 12 नियम क्या हैं ? | : | 06 |
| कहाँ है दिक्कते ? क्या हो समाधान ? | : | 15 |
| ज्यादातर पूछे जाने वाले प्रश्न व उनके उत्तर | : | 18 |
| कुछ अनुभव | : | 27 |
| संभावित 31 व्यंजनों की सूची | : | 29 |
| उपसंहार | : | 30 |

# गुरुदेव का चिंतन – ''एक उत्क्रांति''

रत्नत्रय के महान, आराधक परमागम रहस्यज्ञाता, दीक्षादानेश्वरी श्रीमद् जैनाचार्य 1008 **श्री रामलाल जी म.सा.** ने अपने बैंगलोर वर्षावास के दौरान साधुमार्गी संघ के समक्ष एक अभूतपूर्व चिंतन प्रस्तुत किया। जिसमें उन्होंने संघ के सदस्यों से अपील की कि वे आगे आए, संकल्प लें और सामाजिक कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकें। दूर दृष्टि रखने वाले परम उपकारी गुरूदेव ने यह महसूस किया कि व्यक्ति के सामाजिक और धार्मिक पक्ष का संतुलन बुरी तरह गडबड़ा रहा है। ये दोनों पक्ष साथ– साथ चलने चाहिए। अतएव प्रतिवर्ष श्रावकों के कल्याण हेतु एक से बढ़ कर एक धार्मिक आयाम देने वाले करुणा के सागर ने इस बार सामाजिक स्तर को सुधारने हेतु ''उत्क्रांति'' का बिगुल बजाया।

क्रांतिकारी विचारों के साथ आचार्य भगवन् ने फरमाया कि सुधार तो पूरी दुनिया में आवश्यक है पर हम शुरूवात अपने घर से करें। शादियों एवम् अन्य बड़े आयोजनों में बढ़ते दिखावे, फिजूलखर्च, जीव हिंसा और फूहड़ता को दूर करने की आवश्यकता है। अतः साधुमार्गी संघ सामाजिक कार्यक्रमों में अपनी आचार संहिता बनाए। कुछ बिन्दुओं को उन्होंने चर्चा एवम् विचार हेतु प्रवचन के माध्यम से जन साधारण के समक्ष रखा। जैसे खाने के आयटम की मर्यादा, फूल, पटाखे आदि का उपयोग न हो, सड़को पर नृत्य और महिला संगीत के नाम पर फूहड़ता आदि बंद हो, महंगे आमंत्रण पत्र और दूसरे फिजूल खर्च पर रोक लगे।

इस क्षेत्र में सुधार हेतु गुरुदेव का चिंतन बहुत ही व्यापक है। इसके दूरगामी परिणाम समाज में देखने को निश्चित रूप से मिलेगे है। हालांकि राह आसान नहीं है। इतने वर्षों में देखा देखी अपनी समृद्धि दिखाने की चाह में समाज में बहुत सारी कुरीतियों ने परम्परा का रूप ले लिया है। परन्तु नैतिकता और सच्चाई की राह दिखाने

---

श्रावक दर्शन में जीता है, प्रदर्शन में नहीं। प्रदर्शन एक प्रकार की आग है,
उसमें कितने ही पतंगे झुलस जाते हैं।

– आचार्य श्री रामेश

वाले परम उपकारी आचार्य भगवन् गलत प्रवाह को मोड़ने के प्रयास में कभी पीछे नहीं रहते। ऐसा ही वे अपने श्रावकों को उपदेश भी देते है । एक सफल नेतृत्व कर्ता की यह पहचान भी है कि वे अपने समस्त अनुयायियों को अपने जैसा बनाने हेतु सदा प्रयासरत रहे। आचार्य प्रवर भी चाहते है कि साधुमार्गी संघ एक क्रांतिकारी सुधार समाज में लाने हेतु आदर्श स्थापित करे कि आने वाली पीढ़ियां उसका लाभ उठा सकें।

आचार्य श्री एक ऐसे समाज की कल्पना करते है, जिसका चरित्र दर्पण की तरह साफ हो। जिसकी महक से पूरा राष्ट्र गौरव महसूस कर सके। राष्ट्र धर्म की ऐसी सीख देने वाले विरले ही होते हैं। जो चाहते है, सारी विकृतियों को समाज से झाड़ू लगा लगा कर दूर करें और शुरूवात स्वयं से हो। यही है सच्चा 'स्वच्छ भारत अभियान'।

गुरु भगवंत ने तो दिशा दिखा दी है, अब हमारी बारी है। यदि हम सच्चे गुरु भक्त हैं तो अपने निजी स्वार्थ और झूठी प्रतिष्ठा की परवाह किए बिना 'उत्क्रांति' के इस महान आंदोलन में कंधे से कंधा मिला कर आगे बढ़ेंगे।

आचार्य श्री की यह विशेषता है कि वे कभी किसी चीज के लिये दबाव नहीं डालते। उनकी मंशा सदा रहती है कि श्रावक स्वयं समझे, अपने नियम स्वयं बनाए, आपस में चर्चा करें, सहीं– गलत का निर्णय लें और योजना बद्ध तरीके से आगे बढे । वे तो सिर्फ दिशा देने का कार्य करते है। जितना हम उनके इंगित इशारों को समझ कर सुधार करेंगे उतना ही अपना और समाज का विकास कर पाएंगे।

ऐसा नेतृत्व पाकर पूरा संघ धन्य है।

---

यदि आप जीवन में नैतिकता का कवच पहन लेते हैं और सामाजिक कुरीतियों को मिटाने की दृष्टि से फिजूल खर्च को मिटा देते हैं तो इस दुनिया की मलिनता और कांटे आपका कुछ भी बिगाड़ नहीं कर सकेंगे। (आध्यात्मिक ज्योति) – आचार्य श्री नानेश

# उत्क्रांति क्या है ? एवं उत्क्रांति के मूल उद्देश्य

## उत्क्रांति के 5 मूल उद्देश्य

* जीव हिंसा / विराधना से यथासम्भव बचना।
* फिजूल खर्ची और दिखावा कम हो।
* पर्यावरण प्रदूषण कम हो।
* आयोजनों में फूहड़ता व सांस्कृतिक प्रदूषण को बढावा देने वाली प्रवृत्तियों से बचना।
* सामाजिक एक रूपता लाना।

उत्क्रांति का शाब्दिक अर्थ है, उर्ध्व दिशा में गमन हेतु चरण विन्यास करना। उत्क्रांति केवल शादियों में खर्च कम करना ही नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी शुरूवात है जिससे हमें शक्ति प्राप्त होती है, सत्य की राह पर चलने की। यह हमारे आड़म्बरों और कुरीतियों के उबड़-खाबड़ भूमि को समतल करता है । जब तक हमारा धरातल, हमारी पृष्ठ भूमि समतल नहीं होगी, धर्म की फसल वहाँ कैसे लहराएगी । धर्म का सिर्फ मुखौटा नहीं लगाना है अपितु हमारे भीतर और बाहर एक सा हो यह प्रयास करना है। सामायिक में पूंज कर चलने वाला श्रावक जब सामायिक में न हो तब भी उसके मन की करुणा समाप्त न हो। जब उसके घर विवाह हो तब दूसरे दिन कई क्विंटल फूलों का कचरा न हो। वस्तुतः 'उत्क्रांति' का फार्म भरना तो पहला कदम मात्र ही है, वास्तविक 'उत्क्रांति' तो भीतर घटित होना चाहिए तभी हम अपने जीवन को ऊँचा उठा पाएँगे, तभी हम अपनी आने वाली पीढ़ी के लिये एक बेहतर समाज, एक बेहतर देश दे पाएँगे।

'उत्क्रांति' सिर्फ पैसा बचाना या जीव हिंसा कम करना ही नहीं है इसका अर्थ विशाल है, उद्देश्य विशाल है और यदि इस पर चलेंगे तो परिणाम भी विशाल ही मिलेगा। जितना हम इसके भीतर प्रवेश करते जाएँगे हमें अनुभव होगा एक समाधि का, एक आजादी का। कुरीतियों और अर्थहीन परम्पराओं की बेडियाँ तड़-तड़ टूटने लगेंगी। हममें एक अदम्य साहस का उदय होगा। आचार्य भगवन् ने बहुत सूझ-बूझ से यह अनमोल सौगात हमें दी है। हम उसका मूल्य कितना कर पाते हैं यह तो आने वाला समय ही बताएगा ।

* * *

# उत्क्रांति क्यों आवश्यक है ?
# इसके 12 नियम क्या हैं ?

ऐसे अनेक कारण हैं जो उत्क्रांति की आवश्यकता वर्तमान परिप्रेक्ष्य में साबित करते हैं, परन्तु इसके विस्तार को आपके विवेक पर छोड़ते हुए कुछ मुख्य बिंदुओं पर ही प्रकाश डालते है।

## खाद्य पदार्थों का अपव्यय कम करने

आज शादियों में होड़ मची है एक ऐसे भव्य (?) आयोजन करने की जैसा पहले किसी ने न किया हो, कुछ अलग करना है, लोग याद करेंगे (अब यह बात अलग है कि अधिकतर लोग Tooth Pick से दांत साफ करते हुए कुछ ना कुछ कमी ही बताते हुए बाहर निकलते हैं) और बाहर निकलते ही क्या डेकोरेशन था, क्या-क्या item खाने में थे सब भूल जाते हैं, इसी अंधी दौड़ का फायदा उठा कर केटरर्स नए-नए नाम के ऐसे अनेक item रखवाते है और कहते हैं ''बाउजी! फलां चंद जी के यहां तो 80 item थे हम 100 item रखेंगे, लोग आपकी वाह-वाही करेंगे। उनके वहां per plate 600/- रु. दिये थे आप 800/- रु. का बजट कर दो। अब बाउजी ने नया नया पैसा कमाया है उसके नशे में बोलते हैं ''बजट वजट क्या होता है यार ! मेरी एक ही लडकी है तू अच्छे से अच्छा कर। लोगों को भी मालूम पडना चाहिए अपन क्या चीज हैं।'' इस तरह अपनी समृद्धि का झूठा प्रदर्शन करने की दौड़ में पिछले कुछ वर्षों में स्थितियाँ बिगडती चली गई हैं। जितने भी आमंत्रितगण हैं उनमें से ज्यादातर करीब 9 से 10 item एक समय में खाते हैं और खा पाते हैं। वहां इतने item देखकर बस ये लिया, थोडा चखा और फेंका। इस तरह लग जाता है झूठन का अम्बार। जिस देश में एक बहुत बडी आबादी कुपोषण का

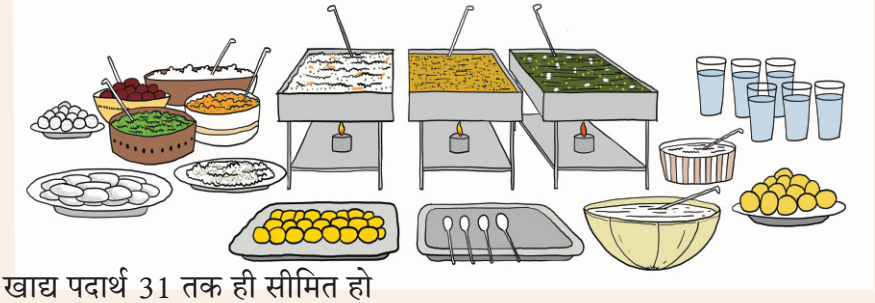

खाद्य पदार्थ 31 तक ही सीमित हो

शिकार है, और जहाँ किसान अपना खून–पसीना एक कर के अनाज पैदा कर रहा है, तब फिर हमें क्या अधिकार है वहां उसे नालियों में बहाने का। धर्म तो इस बात की हमें इजाजत देता ही नहीं, एवं यह तो राष्ट्र के प्रति भी घोर अपराध है। अतः उत्क्रांति में 31 item की सीमा है जो कि एक बहुत ही अच्छे आयोजन के लिये पर्याप्त है।

## निमंत्रण पत्रिका में सादगी

निमंत्रण पत्रिका सादगीपूर्ण हो

निमंत्रण पत्रिका छपवाते समय भी लोग अपनी झूठी शान दिखाने में पीछे नहीं रहते हैं । भारी भारी किताब की तरह निमंत्रण पत्रिकाएं छपने लगी है। इस पर भी लोगों का जी नहीं भरा तो साथ में चॉकलेट आदि का पैकेट भेज कर उसका वजन बढ़ाना चाहते है। पत्रिका छापने वाला समझाता है ''बाउजी ! प्रोग्राम में तो आप 1000 को बुलाओगे तो 800 आएंगे पर पत्रिका तो वे सभी 1000 देखेंगे तथा उनके यहाँ आने वाले भी देखेंगे । आपके यहाँ की पत्रिका तो ऐसी छापूंगा कि शादी के पहले ही शहर में शादी की चर्चा होने लगेगी।'' अब बाउजी को कौन समझाए कि सीजन में प्रतिदिन 4–5 पत्रिकाएं आती हैं और सफाई पसंद लोग शादी कब है ? और कहाँ है ? यह नोट करके उसे तुरंत कूड़ेदान में डाल देते हैं। ऐसा करने से ना सिर्फ आपके लाखों रुपये व्यर्थ होते हैं अपितु आवश्यकता से अधिक कागज का दुरुपयोग कितने ही हरे बांस की बलि लेता है। हमें क्या अधिकार है अपने पर्यावरण को इस तरह नुकसान पहुँचाने का। आजकल तो जमाना मोबाइल और इण्टरनेट का हैं फिर क्यों दिखावे के लिये इस पर फिजुल खर्च किया जाए।

वर्तमान के इलेक्ट्रॉनिक जमाने में व्हाट्स एप्प एवं सोश्यल मीडिया द्वारा भी E-पत्रिका (निमंत्रण पत्र) भेजी जा सकती है जो कि ईको फ्रेन्डली भी है।

निमंत्रण पत्रिका के साथ किसी भी प्रकार का उपहार या गिफ्ट भेजा जाना भी निषेध रहेगा।

## फूल और पटाखों का उपयोग न हो

न तो हमारा धर्म हमें इस बात की छूट देता हैं कि हम वनस्पतिकाय, वायुकाय और तेउकाय के जीवों की अनर्थ हिंसा करे और ना ही पर्यावरण हमें इसकी अनुमति देता है कि हम बिना वजह उसका प्रदूषण करे। आप शादी के दूसरे दिन समारोह वाले मैदान या भवन में जाकर देखें तब आपको अनुभव होगा कि हम कितना कूड़ा.एक शादी के बाद इकट्ठा कर देते हैं। अतः इनसे हमें बचना है। पुण्य से मिली सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य का दुरूपयोग पाप बढाने के लिए न हो, अपितु पुण्य से पुण्य का ही अर्जन किया जाना चाहिए।

वरमाला को छोड़ सचित फूलों का उपयोग न हो

आतिशबाजी न हो

डेकोरेशन में सचित फूलों का उपयोग न हो

परिग्रह वृत्ति एवम् परिग्रह संग्रहण के संबंध में भी ऐसे सामाजिक प्रयास अच्छे परिणाम दिखा सकते हैं जो व्यक्ति की सत्ता या संपत्ति की लिप्साओं पर सामूहिक प्रतिबंध लगाते हो। (आत्म-समीक्षण)

– आचार्य श्री नानेश

## सड़कों पर नाचना और महिला संगीत (संगीत संध्या) नहीं हो

जब कभी हमें ट्रेन अथवा फ्लाइट पकडनी हो और कल्पना करें कि सड़क पर बारात ने जाम लगा रखा है। दूल्हे के दोस्त, रिश्तेदार (आजकल तो महिलाएं भी पीछे नहीं हैं) सारे नाच रहें हैं। आप के भीतर क्या कुछ चल रहा होगा । आखिर पढ़े लिखे सभ्य समाज में ये बुराई आ कहां से गई ? किसी को अस्पताल जाना है, किसी को स्कूल या कॉलेज जाना है, कोई ऑफिस से थका हारा घर पहुंचना चाहता है। बढ़ती हुई जनसंख्या, बढ़ते हुए वाहन, सकरी सड़कें और उसके बाद शादियों में ये बेहूदी हरकतें। आखिर हमें आम जनता को इस तरह परेशान करने का अधिकार किसने दिया? इस पर तो रोक लगनी ही चाहिए।

दूसरी ओर महिला संगीत (संगीत संध्या) के नाम पर क्या कुछ नहीं हो रहा है? एक तो आशीर्वाद समारोह के खर्च से व्यक्ति दबा हुआ था उस पर यह एक और भव्य (?) आयोजन का तामझाम और खर्च।

बॉलीवुड के ग्लैमर से बुरी तरह प्रभावित हमारी युवा पीढी उस दिन अपने

आपको एक सुपरस्टार से कम नहीं समझती। महिलाएं भी नृत्य आता हो न आता हो उनका शरीर व कपडे अनुकूल हों या न हों, बस अपने आपको Modern (?) साबित करने कूद पडती हैं। पूरा समाज जहां आमंत्रित होता है वहां इस तरह का प्रदर्शन शोभनीय नही हैं। इन आयोजनों में भी ज्यादा से ज्यादा खर्च करने की होड मची हुई है। भाडे के कलाकारों को बुलाना अभद्र वेशभूषा में उनसे नाच करवाना लोग अपनी शान समझने लगे है । आखिर ये सिलसिला कहां जा कर रूकेगा ?

आज प्री-वेडिंग शूट, बैचलर पार्टी एवं अन्य सांस्कृतिक प्रदूषण को बढ़ावा देनी वाली प्रवृत्तियाँ समाज को पतन की ओर ले जा रही है, इन सभी प्रवृर्तियों से हमारी अगली पीढ़ी को बचाना हम सभी की जिम्मेदारी है अत: इन आयोजनों एवम् प्रवृर्तियों से दूर रहे।

इन बड़े आयोजनों की आड़ में क्या कुछ होता है और बातें कहाँ तक पहुँच जाती है यह सब विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है। हम सभी देख ही रहे है, इस खुली छूट ने ना जाने अब तक कितने घरों को बर्बाद कर दिया है, हमारे संस्कारों को, हमारे लिहाज को, तार तार कर दिया है । इसके **after effects** हम झेल ही रहें है। हम कब तक मूक दर्शक बनें रहेंगे।

घर घर के लोग जब शादी के बहाने मिलते हैं तो मनोरंजन के लिये छोटा . मोटा कार्यक्रम आपस में करना समझ में आता है परन्तु इस तरह पूरे समाज को बुला कर उसे इतने बडे आयोजन का रूप देना हमें बंद करना होगा।

## महिला वेटर को आवश्यकता पड़ने पर शालीनतापूर्ण वस्त्रों में ही बुलायें

इसी तरह अभद्र कपडों में महिला वेटर भी कहीं से शोभनीय नहीं है। किसी सम्पन्न व्यक्ति ने शुरूआत को लोग status symbol मान लेते हैं और एक के बाद एक अंधानुकरण करने लगते हैं, धीरे-धीरे हमें इसमें बुराई दिखना बंद हो जाती है। यह रवैया दीमक की तरह हमारे समाज को भीतर से खोखला बनाता जा रहा है।

## हम जैन हैं, हमारी पहचान क्या है ?

जमीकंद का प्रयोग न हो

सारी दुनिया में हमारे भोजन को लेकर हमारी एक अलग पहचान हैं। दुनिया के हर कोने में JAIN FOOD आज उपलब्ध हैं। जमीकंद और नॉनवेज का किसी भी रूप में प्रयोग इस तरह के भोजन में नही होता है। वहीं दूसरी ओर हमारे सामूहिक कार्यक्रम के मीनू में जमीकंद का धडल्ले से प्रयोग हो रहा हैं। कभी– कभी तो जमीकंद न खाने वाले को इन बड़े आयोजनों में भूखे रहने की नौबत आ जाती हैं। बहुत से व्यंजनो का नाम आकार या परोसने का ढंग ऐसा होता है कि शाकाहारी और मांसाहारी का फर्क कर पाना मुश्किल हो जाता हैं। हमें अपनी पहचान कायम रखनी होगी। इन चीजों से बचना होगा।

जीव रक्षा हेतु प्रतिबद्ध हमारा धर्म, अहिंसा के धरातल पर टिका है। वैवाहिक कार्यक्रम एक मांगलिक कार्यक्रम है जहां सारे रिश्तेदार, मित्र एक नवयुगल को उनके भावी जीवन के लिये मंगलकामना देने उपस्थित होते हैं। काल, क्षेत्र एवं आसपास के वातावरण के कारण कुछ वर्षों से सामाजिक कार्यक्रमों का स्वरूप बिगडता चला गया। इन कार्यक्रमों में फूलों का उपयोग, जमीकंद का उपयोग, पटाखें एवं आतिशबाजी का उपयोग अनावश्यक रूप से एकेंद्रिय जीवों की हिंसा का कारण (अनर्थदंड) है। इन जीवों को अभयदान देकर ही मंगल कार्यक्रमों को सम्पन्न करने का लक्ष्य रखना होगा। इस पहलू को समझने के लिये थोड़ा धर्म का अध्ययन व उस पर श्रद्धा रखनी होगी।

काकटेल पार्टी (एल्कोहल) न हो

वेस्टर्न कल्चर व व्यसनों से युक्त कोई भी कॉकटेल (एल्कोहल) का काउंटर लगाना पूर्णत: वर्जित है, शरबत, सामान्य पेय पदार्थ, सॉफ्ट ड्रिंक, मॉकटेल आदि के कांउटर यदि सादगीपूर्ण तरीके से लगाए जाए तो कोई बाधा नहीं है बशर्ते उनका डेकोरेशन व सर्विंग एल्कोहल की तरह ना हो।

हमें अच्छाई के मार्ग पर जाना चाहिए भले दुनिया कहीं भी जा रही हों।

– आचार्य श्री रामेश

## कम बाराती ले जाना और दहेज की मांग नहीं करना

आज समाज में लडकियों की कमी है, बडी उम्र के बहुत से लड़के कुंवारे है उन्हें लड़कियाँ मिल नहीं रहीं है उसके बाद भी पुरुष प्रधान इस समाज में लड़की वालों का शोषण जारी है। शादी के अनाप-शनाप खर्च में लडकी वालों पर दबाव डालना, अलग-अलग तरह की मांग करना, बेहिसाब बाराती ले जाना, दहेज मांगना, एक पढ़े लिखे सभ्य समाज को कहीं से भी शोभा नहीं देता। दहेज मांगना तो गैर कानूनी भी है।

दहेज नहीं

अगर गहराई से पड़ताल करें तो इन खर्चों, इन परंपराओं के चलते ही घर में कन्या का जन्म एक चिंता को जन्म देता है। भ्रूण हत्या भी इसका एक प्रमुख कारण है।

हमें आगे आकर इन बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाना होगा। हमें स्वयं एक उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। यदि मूक दर्शक बने रहे तो हो रही इन पंचेद्रियों की हत्या, जल रही बहुएँ और हो रहे तलाक, सभी में कुछ ना कुछ हिस्सेदारी हमारी होगी। इस पाप में हम भागीदार होंगे।

---

चाहे शासन संचालन का काम हो या समाज संचालन का काम सभी जगह धन और अधिकार सम्पन्न लोग ही आगे रहते हैं जो अपने अहंकार का प्रदर्शन किए बिना मानते नहीं हैं ? इस अहंकार की दौड में भले कुछ लोग ही शामिल होते हों लेकिन उनका आतंक सारे समाज और राष्ट्र में फैला हुआ रहता है। (संस्कार क्रांति भाग-2)

– आचार्य श्री नानेश

## समाज में बढती हुई खाई

आयोजनों में जो दिखाई देता है (दुनिया भर का तामझाम और दिखावा)

आयोजनों के पीछे की वास्तविकता (इवेंट वाले, केटरर्स, डेकोरेटर्स चीथड़े उड़ा रहे हैं)

बहुत से सम्पन्न व्यक्ति इस तरह तर्क करते है कि आज हमारे पास किसी चीज की कमी नहीं है, एकाएक बेटी/बेटा है हमारा, अब उसकी शादी में हम अपना शौख पूरा न करें तो क्यों ? बस इसी सोच ने, इसी तर्क ने समाज को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया है। लोग स्वच्छंद हो गए, कोई बोलने वाला नहीं, कोई टोकने वाला नहीं, हम करें सो कायदा। एक ऐसी स्कूल देखने में आई है जहाँ सभी बच्चो को सूती कपड़े की ड्रेस पहनना होता था और स्कूल में सिर्फ साईकल या पैदल ही आ सकते है। ताकि बच्चों में किसी तरह की ऊँच-नीच, अमीर-गरीब की भावना न आए। जब तक समाज में छोटे-बड़े का भेद बढ़ता रहेगा वहाँ समभाव आ ही नहीं सकता। परिणामस्वरूप उस समाज में नए-नए जुर्म होंगे, युवा पीढी अपराधी बनेगी और कारण होगा हमारी वही जिद कि हम कर रहे हैं तो आपको क्या तकलीफ? इसी दिखावे की होड में हमारी छवि एक शोषक वर्ग की बन गई है। याद करें ओडिशा में कुछ वर्ष पहले ऐसे हालात बन गए थे कि सभी शादियां बंद हाल में होती थी। क्या हम उन परिस्थितियों को आमंत्रित कर रहें है।

---

समता साधक को सदा अनासक्त भाव का अभ्यास करना चाहिये ऐसा करने से प्राप्त सत्ता या संपत्ति के दुरूपयोग की मनोवृत्ति नहीं बनेगी तथा कर्तव्य पालन के प्रति जागरूकता निरंतर बनी रहेगी। (आत्म-समीक्षण)

– आचार्य श्री नानेश

हमें संयम रखना होगा 'उत्क्रांति' के 12 नियम इसी कड़ी में एक मार्गदर्शिका है। हमारे पास अगर धन-सम्पत्ति है, तो हमें जिन कार्यक्रमों में समाज आमंत्रित है वहाँ एक लक्ष्मण रेखा तो खींचनी ही होगी, एक मार्गदर्शिका तो होनी ही चाहिए। हमारे द्वारा किया गया कोई भी आडम्बर या दिखावा दूसरों के लिये तकलीफ दायक न बन जाए।

कल्पना करें दो भाइयों का परिवार है बड़े भाई ने जमीन आदि में अच्छा पैसा कमा लिया अब अपनी बेटी की शादी में वो बताना चाहता है कि मैं मांगीलाल या मांग्या नहीं रहा, एम. एल. जैन हो गया हूं। बस इसी नशे में वह अनाप-शनाप खर्च करता है। एक वर्ष बाद छोटे भाई की बेटी की शादी तय होती है वह कहती है 'पापा! मेरी शादी भी गुड्डी जीजी की तरह धूमधाम से करो ना।' अब जिस लड़की ने आज तक कुछ नहीं मांगा उसकी इस मांग को उसका लाचार पिता सोचता है आखिर पूरा क्यों न करे। अतः वह अपने सामर्थ्य से ज्यादा खर्च करता है, कर्ज लेता है, कुछ पुरानी जमीन बेचकर तथा बेटे को व्यापार में जो पूंजी देनी थी उसमें कटौती करके, बंटवारे में उसके हिस्से आई बीमार माँ के इलाज में समझौता करके पैसों का जुगाड़ करता है। इस दबाव में वह अपनी सारी प्राथमिकताएँ भूल जाता है क्योंकि उसे अपनी लाडो की इच्छा जो पूरी करनी है अब यदि बड़ा भाई यह कहे 'मैंने कमाया मैंने खर्च किया है इससे दूसरों को क्या तकलीफ ?' तो यह ठीक नहीं है। बेशक आपने कमाया है आपको उसे खर्च करने से कोई रोकने वाला नहीं परन्तु यह विवेक रखने की आवश्यकता है कि आपका यह कार्य परिवार या समाज में अन्य को तकलीफ न पहुँचाए। समाज का संतुलन न बिगडे, छवि खराब न हो और हमारे समाज के सदस्यों की पहचान पांच करोड़ की पार्टी, पचास करोड़ की पार्टी ही न रह जाए।

पैसा तो अन्य समाज के पास भी है परन्तु जितना दिखावे की प्रवृत्ति हमारे समाज में बढ़ रही है वह आत्मघाती है। फिर हम शिकायत करते हैं कि सरकार हम लोगो के यहाँ ही आयकर के इतने छापे क्यों मारती है।

अतः समय रहते समाज के जिम्मेदार लोगों को कदम उठाना होगा । कुछ Guide lines कुछ मार्गदर्शिका तो होनी ही चाहिए । सिर्फ स्वविवेक पर छोड़ देने से पानी एक दिन सिर के ऊपर जाने वाला है।

* * *

चले बनायें साधुमार्गी उत्क्रांति परिवार, गुरु राम का सपना करें साकार।
उत्क्रांति के नियम करें स्वीकार, यही है सुखी समाज का आधार।।

# कहाँ है दिक्कते ? क्या हो समाधान ?

देखा-देखी एवं होड़ा होड़ के कारण एक आयोजन से दूसरे आयोजन में दिखावा व फिजूल खर्च बढ़ता चला गया। इतने वर्षो में लोग इसे एक परम्परा के रूप में देखने लग गए है। अब उस प्रवाह के विपरीत खड़े होने का साहस हर कोई नहीं कर पा रहा है। किसी व्यक्ति ने यदि सादगी से कार्यक्रम किया तो लोग चर्चा करने लग जाते हैं कि शायद भीतर से उसकी स्थिति ठीक नही हैं या कि एकदम कंजूस है सिर्फ खाना जानता है खिलाना जानता ही नही आदि। आम व्यक्ति के मन में यह बात बैठ गयी है समाज में सम्पन्न लोगों की ही पूछ होती है, उन्हें ही पद और सम्मान दिया जाता है, उन्हीं की बात सुनी जाती है, इसलिये मुझे भी अधिक से अधिक धन कमाना है चाहे उसके लिये अन्याय अनीति का सहारा ही क्यों न लेना पड़े। व्यक्ति सोचता है जब उसने अच्छा खासा धन कमाया है, तब फिर सामाजिक आयोजन ही एक ऐसा प्लेटफार्म है जहाँ से वह लोगों को बता सकता है कि मैं भी कुछ हूँ। मेरा रेटिंग अब आप सुधार लो।

कई लोगों से इस विषय पर चर्चा हुई लगभग सभी चाहते हैं कि इस दिशा में सुधार आवश्यक है, पर वे चाहते हैं कि शुरूवात पड़ोसी से ही हो। गुरुदेव बार- बार फरमाते हैं कि हम यदि कोई भी सुधार चाहते है तो शुरूआत स्वयं से ही करें रास्ता अपने आप बन जाएगा।

इतने वर्षों की कड़ी मेहनत (?) के बाद हमने इस समस्या को खड़ा किया है तब फिर समाधान के लिये भी वैसी ही प्रबल (दृढ़) इच्छा शक्ति और पुरूषार्थ की आवश्यकता होगी। बदलाव महसूस किया जा रहा है, पहले तो लोग सादगी से कार्यक्रम करने में घबराते थे पर अब प्रवेश द्वार पर ही 'उत्क्रांति-परिवार' का बैनर लगा कर निश्चिंत हो चुके हैं। आम जन मानस इन्हें सम्मान की दृष्टि से देखने लगा है। इनकी गुरुभक्ति, गुरु समर्पणा और सुधारवादी दृष्टिकोण का लोग उदाहरण प्रस्तुत करने लगे हैं। परन्तु जो परिवार इससे जुड़ नहीं पाए हैं उनके लिये एक मार्गदशिका की आवश्यकता है। एक बहुत ही प्रेरक उदाहरण देखने में आया हैं। एक संघ ने अपने नियम बनाए हैं, उनकी कमेटी समस्त आयोजनों का पूर्वनिरीक्षण करती है। यदि

बाहरी तत्वों पर अहंकार करना और बाहरी वैभव पर मदांध बनना यह अपने आत्मिक स्वरूप को भुलाना है। (समीक्षण ध्यान : एक मनोविज्ञान)- आचार्य श्री नानेश

उल्लंघन हुआ तो समाज के लोग व्यवहार (लिफाफा/भेंट) तो देते हैं पर भोजन किए बगैर चले जाते हैं। धन्य है ऐसे समाज को और उनके गांधीवादी तरीके को।

संयुक्त परिवारों में यह समस्या आम हैं कि एक का विवाह धूमधाम से व्यापक पैमाने पर हुआ तो हमारा क्यों नहीं। इस परिपेक्ष्य में एक बहुत ही अच्छा उदाहरण इन दिनों देखने में आया। एक परिवार का मुखिया कुछ सुधार चाहता था। उन्होनें अपने भतीजे के सामने प्रस्ताव रखा। उन्होंने उससे कहा 'बेटा अगर तुम विवाह सादगी से करना चाहो तो जो राशि बचेगी वह तुम्हारी होगी। उससे तुम अपना व्यापार करो, बैंक में फिक्स करो या सत्कार्यों में लगाओ जैसी तुम्हारी मर्जी हो करो। क्योंकि इस दिखावे और आडंबर के चलते हम पिछली 3-4 शादियों में काफी पैसा और ऊर्जा व्यर्थ कर चुकें हैं। तुम चाहो तो मेहनत से कमाया हुआ हमारा धन यूं ही बहने से रोक सकते हो। तुम्हारा यह कदम तुम्हारे छोटे भाई/बहनों के लिये भी आदर्श प्रस्तुत करेगा'। यह सुनकर उस पढ़े-लिखे समझदार नवयुवक ने तुरंत कहा 'बड़े पापा! मुझे कोई शौक नहीं हैं इस तरह से पैसा लुटाने का, मैं 2 वर्षों से जॉब कर रहा हूँ, मुझे अंदाजा हो गया हैं कि पैसा कमाने में कितनी मेहनत लगती है। मैं स्वयं का व्यापार प्रारंभ करना चाहता हूँ, आप कुछ भी विचार न करें और मेरा विवाह सादगी से ही करवाएँ। मैं समझ सकता हूं कि समाज के कई शुभचिंतक आप पर ताना कसेंगे कि स्वयं के बच्चों की तो शादी धूमधाम से की अब भाई के बच्चों की बारी आई तो समाज सुधार का ठेका ले लिया। लेकिन जब आप इसकी चिंता न करते हुए मेरा हित चाहते हैं तो मैं क्यों पीछे रहूँ?'

एक और बडी समस्या आती हैं संगीत संध्या की। लोगों का तर्क है कि एक यही आयोजन होता हैं जो शादियों का आकर्षण होता है। इसके बिना तो शादियाँ बेजान हो जाएँगी। लगातार हम जिस तरीके से कार्य करते हैं या होते हुए देखते हैं हमें वही तरीका सही लगने लगता हैं। आज से 25-30 वर्ष पूर्व इस तरह के आयोजन नहीं होते थे तब क्या शादियां बेजान हुआ करती थी?

दरअसल तब शादियों का उद्देश्य होता था मेल-जोल, एक दूसरें का सुख-दुख साझा करना और कितने ही विवाह के संबंधों की नींव इन शादियों में पड़ जाती थी। लेकिन आजकल हम कमरों में बंद हो जाते हैं, तैयार होकर निकलते हैं 3-4 घंटे

का कार्यक्रम देखने, जिस दौरान अगर आप कुछ कहो तो बगल वाला भी सुन नही सकता क्योंकि इतनी तेज आवाज वहाँ होती हैं। घर वाले व बच्चे तनाव में होते हैं अपने-अपने performance को लेकर । उन्हें स्टेज पर डांस करना हैं जिसके लिये ना तो उनका शरीर फिट हैं और ना ही उन्हें इसका बहुत अनुभव हैं। कितनी ही दुर्घटनाएँ हम देख चुके हैं इन भव्य आयोजनों में कहीं स्लिप डिस्क, कहीं फ्रैक्चर, कहीं आतिशबाजी से होने वाली दुर्घटनाएँ, कहीं तो grand entry के चक्कर में दुल्हा दुल्हन ही घायल हो जातें हैं। लोग सोचते हैं लाखों रुपये जिस आयोजन में लगा है वह आयोजन सफल होना चाहिए। अब कौन समझाए कि आपके आयोजन की सफलता किसमें हैं ? आने वाले से आप ठीक से मिलो, खाने की मनुहार करो, उसके सुख दुख बांटो उसमें या 3-4 घंटे स्टेज पर धूम-धड़ाका कर लिया उसमें।

इंटरनेट, मोबाइल फोन, व्हाट्स-एप्प जैसे अत्याधुनिक साधनों से हम पूरी दुनिया की खबर चंद सेकण्ड्स में जान लेते हैं पर हमारे अपनों की खबर हम नहीं रख पाते हैं। हमारे बच्चों की शादियों के लिए मैरिज ब्यूरो और दलालों का सहारा लेना पड रहा है। ये बाहर के तामझाम, इन बड़े आयोजनों की झूठी चमक दमक, ये लुभाने वाले ग्लैमर भीतर से पूरी तरह खोखले हैं। आत्मीयता का रस सूखता जा रहा है। हमारे संबंध, हमारे संस्कार, हमारी गाढ़ी कमाई को तहस-नहस करने वाले ये आयोजन समाज पर बोझ है।

वैसे आजकल लोग इन आयोजनों से भी उब चुके हैं स्टेज पर कौन क्या कर रहा ज्यादातर लोगों को दिलचस्पी ही नही होती। शहर के लोकल आमंत्रित गण तो सिर्फ चेहरा दिखाकर कुछ खा-पीकर, कुछ फेंककर चले जाते है लेकिन रिश्तेदार और बाहर से आए हुए लोगों के पास दूसरा कोई option नहीं होता इसलिये मजबूरन बैठे रहते हैं या फिर भीड़ में घुसकर खाने का घुसकर खाने की व्यवस्था करते रहते हैं।

* * *

एक अभिमानी मनुष्य अपने मन में मदमस्त हाथी की तरह पागल बना हुआ रहता है
जो सदा दूसरों को अपमानित एवम् प्रताड़ित करने में अपना आनंद मानता है।
वह अपनी छिछली उपलब्धियों तथा ओछी शक्तियों को इस तरह प्रदर्शित करता है।
जैसे कि उनकी कोई तुलना ही न हो। (संस्कार क्रांति भाग-2)

– आचार्य श्री नानेश

# ज्यादातर पूछे जाने वाले प्रश्न व उनके उत्तर

प्र. कल हमारे बच्चों के संबंध करने में उत्क्रांति के ये नियम बाधक न बन जाएँ।

उ. यह हमारे दिमाग का भ्रम हैं। आप तो फॉर्म भरने के बाद बच्चों के विवाह हेतु तैयार किये जाने वाले biodata में ही इस बात का उल्लेख कर दें कि हमारा परिवार उत्क्रांति परिवार हैं और हमारे परिवार में होने वाला कोई भी आयोजन उसके नियमों से ही होगा। उत्क्रांति के नियमों की जानकारी हेतु हमारी अधिकृत वेबसाईड पर अवलोकन करें। अगर आप लड़के वाले हैं तो सभी लड़की वाले विवाह में होने वाले कम खर्च से निश्चित हो जायेंगे और उन्हें यह भी भरोसा होगा कि हमारी लड़की एक संस्कारी परिवार में जा रही हैं। यदि आपकी लड़की है, निश्चित जानिए लडके वाले आपको प्राथमिकता देंगे क्योंकि लड़की वाले अपनी शर्तों पर संबंध करना चाहते हैं इसका अर्थ है कि लड़की संस्कारी हैं, गुणवान है और उन्हें इतना आत्मविश्वास है कि सुधारवादी सोच वाले ही परिवार में वे संबंध करना चाहते हैं अन्य के लिये दरवाजे बंद हैं। वैसे भी समाज में संस्कारी लड़कियों की तलाश में लड़के वाले भटकते रहते हैं, आखिर उनके परिवार का पूरा भविष्य इस निर्णय पर टिका होता है। अतः ये नियम किसी भी तरह बच्चों के संबंध करने में बाधक नहीं अपितु सहयोगी ही बनेंगे ।

प्र. संगीत संध्या के लिये बच्चे नहीं मानते ।

उ. संगीत संध्या के लिये बच्चे नहीं मान रहें हैं इस तरह की आड ज्यादातर वो ही पालक लेते देखे गए जिनका खुद का मानस नहीं बना है। आपने अपने बच्चों को बहुत सी बार भिन्न-भिन्न चीजें के लिये मनाया ही होगा। इस दिशा में भी प्रयास करेंगे तो सफलता मिलेगी ही। इसके बाद भी यदि नहीं मानते तो एक बार आस पास विराजित साधु जी-साध्वी जी के सानिध्य में भी जाकर समझाने हेतु निवेदन करें। (हम कितनी अनर्थ हिंसा से बच सकते हैं, संस्कारों की भी रक्षा होगी , पैसे बचेंगे वो अलग।)

प्र. संगीत संध्या का आयोजन नहीं करके क्या परिवार के सदस्य मनोरंजक कार्यक्रम कर सकते है।

व्यक्ति और समाज के हितों में परस्पर एक सुंदर संतुलन होना चाहिए जिससे कि व्यापक अहित को रोका जा सके। (संस्कार क्रांति भाग-2) - आचार्य श्री नानेश

उ. हमारे घर की बहू बेटियाँ Stage पर नाच गान करे और लोग सीटियाँ बजाये Hoot करें ये बहुत ही निराशाजनक और विचारणीय बात है। ये कुरीतियाँ हमारे समाज का हिस्सा बनती जा रही हैं और इनसे कोसों दूर रहना हमारा परम उद्देश्य हैं।

1. यह Function शादी के main Function, जहाँ जन सामान्य को Invitation हो, ऐसे में आयोजित नहीं किया जाये।
2. इस Function का कोई card न छपे और न ही किसी card में इसका उल्लेख हो, ऐसी स्थिति में पारिवारिकजन नृत्य संगीत का छोटा कार्यक्रम करें तो बाधा नहीं।
3. किसी भी प्रकार के बाह्य एंकर/कोरियोग्राफर/डांसर की सहायता नहीं ली जाए।
4. ऐसी आर्केस्टा पार्टी जिसमें सिर्फ गायन हो किसी भी प्रकार का नृत्य नहीं हो तो उसमें कोई बाधा नहीं है।

प्र. क्या high-tea एवं dinner को मिलाकर 31 आइटम होने चाहिए कई Function में program का duration शाम से रात तक रहता है। ऐसे में high-tea के पश्चात् dinner रखा जाता है।

उ. मूल बात यह है कि एक time में 31 item से ज्यादा नहीं रहने चाहिए। dinner के 31 आइटम लगने से पहले high-tea उठ जाना चाहिए।

प्र. जमीकंद के बिना खाने का टेस्ट नहीं आता।

उ. सामूहिक भोज में जमीकंद से बड़े पैमाने पर हिंसा होती हैं। हमारी पहचान ही जैन फुड से विश्व में हैं और रहा सवाल टेस्ट का तो यह सब मन का वहम है बिना आलू, प्याज, लहसुन के भी व्यंजन स्वादिष्ट और पौष्टिक बनाए जा सकते हैं।

प्र. पत्रिका सादगी पूर्ण का क्या अभिप्राय है ?

उ. सादगी पूर्ण पत्रिका का सीधा सा अर्थ है कि वह अधिक मूल्य की न हो, उसमें आवश्यकता से अधिक कागज आदि का उपयोग न हो। आजकल तो बहुत से सुधारवादी परिवारों ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का उपयोग करते हुए पेपरलेस E-आमंत्रण की सुंदर शुरूआत भी की है। अतः दो–तीन दिनों में डस्टबीन में जाने वाली पत्रिका में सिर्फ अपनी झूठी शान दिखाने, पर्यावरण को दूषित न करें ?

प्र. फार्म भरने पर यह कितने पीढ़ी पर लागू होता है ।

उ. यदि दादाजी फार्म भर रहें हैं तो उनके वयस्क पोते पोतियों तक और यदि पिता जी फार्म भर रहे हैं तो उनके पुत्र/पुत्री तक ही यह लागू होगा।

प्र. मैं लड़की का पिता हूं मैंने उत्क्रांति का फार्म भरा है अब मेरी लड़की की शादी में मैं लड़के वालों के शहर जा रहा हूं वहां के सारे कार्यक्रम उनके दिशा निर्देश में चल रहें हैं तो मैं क्या कर सकता हूं मेरे यहां के कार्यक्रम तो मैंने उत्क्रांति से ही किए हैं ?

उ. आपकी बात व्यवहारिक है परन्तु इसकी आड़ में बहुत से लोग गली निकालने लगेंगे ? अत: कोई भी ऐसा आयोजन जहां आपके द्वारा आपके स्वजन/परिजन/समाज के लोग आमंत्रित हैं उसमें आपकों उत्क्रांति का पालन करना होगा। बेहतर होगा कि आप अपने बच्चों के बायोडाटा बनवाते समय ही इस बात का उल्लेख कर दें ताकि सामने वालों को पहले से सारी बातों की जानकारी हो जाए। इसमें और भी स्पष्टीकरण देना आवश्यक है । किसी तीसरे स्थान पर जाकर दोनों पक्ष विवाह (कॉमन खर्च से) कर रहे हो तब भी उन सभी आयोजनों में उत्क्रांति के नियमों का पालन करना होगा ?

प्र. खाने पीने की 31 आइटम में यदि बारात आगमन पर गेट पर कोई आइटम दिया गया तो वह भी शामिल होगा क्या ?

उ. नहीं भोजन में सभी आमंत्रितों के लिए जो व्यवस्था है उसकी सीमा ही 31 निर्धारित की गई है ?

प्र. किसी 1 स्टाल जैसे साउथ इंडियन, चायनिज या भजिया आदि के विभिन्न प्रकार हों तो एक आइटम गिना जाएगा या अधिक ?

उ. स्टाल एक होने से एक नहीं गिना जा सकता जितने व्यंजन होंगे उसी हिसाब से गिनती होगी । (देखें संभावित 31 व्यंजनों की सूची)

प्र. तवा सब्जी में पांच छह तरह की सब्जी एक ही तवे पर होती है उसे किस तरह गिनेंगे ?

उ. जितनी सब्जी अलग अलग परोसी जा रही है वो अलग अलग गिनी जाएगी ।

प्र. फूलों का उपयोग गाड़ी या रूम के डेकोरेशन में किया जा सकता है क्या ?

---

शादियों पर अनावश्यक खर्चे और आडम्बरों पर प्रतिबंध लगाइए ।
युग निर्माता गुरू राम का आह्वान उत्क्रान्ति संकल्प अपनाइए ।।

उ. एक उत्क्रांति परिवार वरमाला में सचित फूलों का उपयोग कर सकता है परन्तु सजावट, सौंदर्य, स्वागत व अन्य कार्यक्रम में सचित फूलों का उपयोग नहीं करें।

प्र. सड़क पर नहीं नाचना का क्या तात्पर्य है, साइड हो कर मैदान में नाच सकते हैं ?

उ. सड़क का तात्पर्य ऐसा कोई भी स्थान जो आम जनता को दृष्टि गोचर हो सके अथवा उन्हें बाधा पहुंचाए वहां बरातियों को नहीं नाचना चाहिए।

प्र. किसी व्यक्ति ने उत्क्रांति का फार्म भरा है क्या वह अन्य के यहां विवाह प्रसंग पर भाग ले सकता है यदि वह कार्यक्रम उत्क्रांति से नहीं हो रहा हो ?

उ. फार्म भरने के बाद व्यक्ति सिर्फ अपने परिवार के आयोजनों में ही उत्क्रांति के नियम पालन करने हेतु कटिबद्ध होता है। अन्य परिवारों में हो रहे आयोजनों में उस पर कोई बाध्यता नहीं है, वह अपने विवेक से निर्णय ले सकता है।

प्र. ऐसी होटलों में जहां नॉनवेज बनता हो वहां मेहमानों को ठहराया जा सकता है या नहीं ?

उ. जब कोई दूसरी व्यवस्था संभव न हो तो ठहराने में बाधा नहीं है परंतु खाना–पीना केटरिंग आदि अलग जगह होना चाहिए। बने जहाँ तक ऐसे स्थानों को टालना ही उचित है।

प्र. क्या उत्क्रांति परिवार के वैवाहिक भोज दिन में ही होने चाहिए ?

उ. लक्ष्य तो यही होना चाहिए कि हमारे सारे कार्यक्रम दिन में ही संपन्न हो, इससे न सिर्फ अनेक जीवों को अभय दान मिलता है अपितु अनेक आड़म्बर से स्वमेव ही बच सकते हैं। वैसे व्यवहारिक दिक्कतों के चलते ऐसी बाध्यता नहीं है।

प्र. नॉनवेज नाम और आकार के व्यंजनों पर प्रतिबंध क्यों होना चाहिए ?

उ. बिरयानी, आमलेट, कबाब, भुरजी आदि नाम व जिस तरह से लोहे तार में बींध कर नॉनवेज परोसा जाता है या जानवरों के आकार में खाने की वस्तु या सलाद आदि को सजाया जाता है उस पर रोक लगाना

खाने के पदार्थों को नानवेज नाम या आकार में न रखें।

झूठा है दिखावा, है झूठी शान, सदा सरल बने इंसान।
समाजिक उत्क्रांति, है समाधान, राम गुरु ने किया आह्वान।।

आवश्यक है। यह हमारी युवा पीढ़ी को गुमराह कर सकता है । आने वाले समय में नॉनवेज के प्रति घृणा समाप्त हो सकती है प्राणि मात्र के प्रति करूणा का भी अंत हो सकता है अत: Precaution is better than cure.

प्र. बहुत से लोग लम्बे लम्बे भाषण देते हैं पर स्वयं उन आदर्शों का पालन नहीं करते फिर हम क्यों उत्क्रांति का पालन करें।

उ. यह सही है कि व्यक्ति को दूसरों को प्रेरणा देने के पहले स्वयं अनुसरण करना चाहिए तभी उसका असर होता है । परंतु हम बिना किसी पूर्वाग्रह के विचार करें कि कोई भी सलाह यदि हमारे हित में है या समाज के हित में हैं तो उसे मानने में कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए। प्रतिदिन 10-12 सिगरेट पीने वाला चिकित्सक यदि अपने मरीज को सिगरेट नहीं पीने के सलाह देता है तो उसे मानना चाहिए या नहीं ?

प्र. क्या उत्क्रांति परिवार दहेज में कुछ भी नहीं ले सकता है ?

उ. दहेज एक ऐसी कुप्रथा है जिस पर तुरंत रोक लगनी चाहिए। यह गैर कानूनी भी है। दहेज सीधे मांगना या किसी के मार्फत मांगना या ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करना जिससे लड़की का पिता अनावश्यक रूप से बड़े खर्चे में पड़ जाये यह सारी बातें एक जैसी ही है। लड़की के परिजन स्वेच्छा से कुछ देते हैं उस पर बंधन नहीं है।

प्र. सीमित बाराती से क्या अभिप्राय है ?

उ. बारातियों की संख्या बहुत सी बातों पर निर्भर करती है जैसे परिवार कितना बड़ा है ? विवाह स्थानीय है। शहर से नजदीक है अथवा दूर । अतः यह निर्णय स्वविवेक से करें। इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि लड़की वालों पर अनावश्यक बोझ न बढ़े ।

प्र. डेकोरेशन के लिए 'उत्क्रांति' परिवारों को क्या दिशा निर्देश है ?

उ. यह कार्य सादगी पूर्ण होना चाहिए । दिखावे की प्रवृत्ति अत्यधिक घातक है । समाज में जहाँ इतनी अधिक आर्थिक विषमता है वहाँ हमें दिखावे से बचना चाहिए । इससे हमारी छवि 'शोषक' की बनती है ।

प्र. उत्क्रांति परिवार किसी तीसरी जगह (Destination marriage) विवाह कर सकता है या नहीं ?

उ. इस पर कोई बंधन नहीं है, दोनों परिवारों की सुविधा के लिये ऐसा किया जा सकता है। सारे नियम यथावत् लागू रहेंगे। परंतु विदेश जा कर करना 'उत्क्रांति' के मूल उद्देश से ही भटकना है ।

प्र. उत्क्रांति के 12 नियमों में शादियों में थीम पार्टी, बैचलर पार्टी, कार्नीवाल, प्री वेडिंग आदि पर तो कोई प्रतिबंध नहीं है ।

उ. उत्क्रांति के 12 नियम हैं। यदि 1200 नियम भी बना दिये जाएं तब भी गली निकालने वाले निकाल सकते हैं। हमें इसकी मूल भावना को समझना है। 'शादी ब्याह में आडम्बर दिखावा, फिजूल खर्च, सांस्कृतिक प्रदूषण से हमें बचना है। हम जैन हैं अहिंसा इसकी रीढ़ है इस गौरव को हमें कायम रखना है । संस्कारों की रक्षा करते हुए फूहड़ता से दूर रहना है।' बस! इन मूल भावनाओं से यदि हम सहमत हैं तभी हमें फार्म भरना चाहिए । और यदि हम कौन हैं ? कितने

ज्ञानी जनों का कथन है कि तुम अपने जीवन की आर्थिक कमजोरियों को बाहर रखों लेकिन अपनी उपलब्धियों को अपनी आमदनी को और जीवन में प्राप्त होने वाली उपलब्धियों को दुनिया के सामने प्रदर्शित मत करों। (समता निर्झर)

– आचार्य श्री नानेश

सम्पन्न हैं ? यही साबित करना हमारे आयोजनों का उद्देश्य है, प्रवाह के विपरीत खड़े होने का हममें साहस नहीं हैं तब इस क्रांतिकारी मुहीम का हिस्सा हम कैसे बन सकते हैं ?

इस तरह की पार्टी उत्क्रांति परिवारों के लिये कैसे संभव है ? यह सारे इवेंट वालों को अपनी उपस्थिति दिखा कर लाखों रुपये ऐंठने के उपाय हैं। इन्हीं सब से तो बाहर निकलना है ।

प्र. हमने फार्म भरा है और हमारे यहां के सारे आयोजनों में हम उसका पालन कर रहें हैं । सामने वाले के यहाँ के कार्यक्रम जिसमें हम शामिल नहीं हो रहे हैं वहाँ उत्क्रांति के नियमों के विपरीत आयोजन हो तब क्या बाधा है ?

उ. उत्क्रांति के नियम आपके परिवार द्वारा जिन आयोजनों में आमंत्रण दिया जा रहा है, आपके परिवार द्वारा भाग लिया जा रहा है वहीं लागू है। दूसरा पक्ष अपने व्यक्तिगत आयोजन जिनका आप हिस्सा नहीं हैं, के लिए स्वतंत्र है।

अत: ऐसी परिस्थितियों में जब सामने वाला पक्ष जिसने उत्क्रांति का फार्म नही भरा है और उसके नियमों को मानने तैयार नहीं है आप यह रास्ता अपना सकते हैं।

प्र. महिला संगीत तो शादी विवाह का अभिन्न अंग है। उत्क्रांति परिवार क्या इसका आयोजन नहीं कर सकता ?

उ. समय-समय पर इसका स्पष्टीकरण दिया जा चुका है । महिलाओं के गीत या संगीत के कार्यक्रमों में कोई भी आपत्ति नहीं है। परन्तु धीरे-धीरे इस आयोजन से अपनी सारी हदे पार कर दी है। फूहड़ता, दिखावा, अंग प्रदर्शन और फिजूल खर्च अपने चरम पर पहुंच चुका है। इस कार्यक्रम के ग्लैमर ने युवा पीढ़ी को बुरी तरह से अपनी गिरफ्त में ले लिया है। अत इन कार्यक्रमों की आचार संहिता बनाना आवश्यक है ताकि इस पर कुछ लगाम लग पाए।

1. ऐसे आयोजन निहायत ही निजी हो सिर्फ घर-घर के लोग बच्चे एवं महिलाएँ ही इसमें शामिल हों।
2. इन कार्यक्रमों में कोई भी प्रोफेशनल आर्टिस्ट, डांसर, कोरियोग्राफर, न हो।
3. ऐसे आयोजन शालीनता से हों एवं सामान्य जन, सामाजिक एवं व्यवसायिक संबंधित आमंत्रित नहीं हो।

शादियों पर अनावश्यक खर्चे और आडम्बरों पर प्रतिबंध लगाइए ।
युग निर्माता गुरू राम का आह्वान उत्क्रान्ति संकल्प अपनाइए ।।

प्र. जिन्होंने उत्क्रांति का फार्म भरा है उन्हें दूसरे परिवारों द्वारा आयोजित संगीत संध्या के कार्यक्रम में शामिल नहीं होना चाहिए।

उ. यह बात हम बार–बार स्पष्ट कर रहें है जिन्होंने उत्क्रांति का फार्म भरा है उनके स्वयं के परिवार में होने वाले शादी–ब्याह के कार्यक्रमों के लिये ही ये नियम लागू है अन्यथा दूसरे परिवार के आयोजनों में उपस्थित होना या न होना उनका व्यक्तिगत निर्णय है, उस पर कोई प्रतिबंध या आपत्ति नहीं है। व्यवहारिक जीवन में ऐसी पाबंदी लगाना उचित भी नहीं है।

प्र. जिस परिवार ने फार्म भरा है और उसका पालन नहीं किया उसके लिये क्या करें ?

उ. वर्तमान में हमारे पास ऐसी कोई व्यवस्था नही है जो इन आयोजनों का निरीक्षण कर तय कर सकें कि अमुक आयोजन में नियम का पालन हुआ या नहीं। इस हेतु स्थानीय स्तर पर संघ समाज ''उत्क्रांति मोनीटर कमेटी'' की व्यवस्था बना सकता है । साथ ही ऐसी व्यवस्था संघ समाज को तोड़ने वाली न हो बल्कि जोड़ने वाली हो ।

जिस तरह आज बहुत से लोग ऐसा सोचते हैं कि हमारे आयोजन में यदि ऐसा नहीं किया तो लोग क्या सोंचेंगे, ये हमारे स्टेटस के हिसाब से नहीं है आदि–आदि । वही यदि समाज का बड़ा हिस्सा जो इस बीमारी से बुरी तरह पीड़ित है वो एक हो कर फिजूलखर्च और दिखावा करने वाले आयोजनों पर प्रश्न चिन्ह लगाएं । तब वह दिन दूर नहीं जब ऐसे अप्रासंगिक और महंगे आयोजन करने के पहले सम्पन्न से सम्पन्न व्यक्ति दस बार विचार करेगा ।

प्र. इतना कमाया है बच्चों पर खर्च न करें तो क्यों?

उ. निश्चित रूप से आपकी कमाई बच्चों के लिए ही तो है। परन्तु हम डेकोरेशन, अनगिनत व्यंजन, इवेंट वालों के नए नए चोचले में इतना खर्च कर उस आयोजन को यादगार सबसे अलग बनाने का प्रयास करते हैं। परन्तु आप निश्चित मानिये अब लोग इन सबसे भी उब चुके हैं आपने पिछले साल इतनी शादियाँ अटेंड की, कितनों के मीनू, डेकोरेशन आपको याद है। 100 व्यंजन रखने पर भी आपके शुभ चिंतक तो यही बोलते हुए बाहर निकलेंगे 'यार! दही बड़े का बड़ा उतना साफ्ट नहीं था।' आप महिला संगीत में अपने Performance के तनाव में उलझे रहेंगे तो आने जाने वालों से ना तो मिल पाएंगे ना उनकी मनुहार ही कर पाएंगे। रिश्तों की मिठास तो मानो सिमट ही गई

है। रह गया है बस प्रदर्शन 'मैं भी कुछ हूँ।' लोग सब जानते हैं, सब समझते हैं वाकई में कुछ है तो यह छुपा नहीं रहेगा और सिर्फ इन आडम्बर, प्रदर्शन से आप कुछ साबित नहीं कर सकते।

आप प्रवाह के विपरीत खड़े होने का साहस करें अपने आयोजनों को इतना अधिक दिखावटी, कृत्रिम और बोझिल न बनाएं। बच्चों के भविष्य के लिये अपनी गाढ़ी कमाई का सदुपयोग करें।

प्र. हम लड़की वाले है हमने उत्क्रान्ति ले रखी है और उसका पालन भी कर रहे है किंतु समधी जी नहीं मानते और वह उनके यहाँ संगीत करें और कम से कम लड़की (दुल्हन) को उसमें शामिल होने हेतु अति आग्रह करें तो ऐसे पारिवारिक दबाव की स्थिति में हम क्या करें....?

उ. ऐसी पारिवारिक दबाव की परिस्थिति में प्रथम दृष्टतया तो किसी को भी नहीं जाना चाहिए फिर भी ज्यादा आग्रह की स्थिति में लड़की जा सकती है किंतु किसी भी परिस्थिति में वहाँ कोई भी नृत्य प्रस्तुति नहीं देवे....

प्र. आजकल शादियाँ रिसोर्ट एवं 5 स्टार होटलों में होती है जो प्राय: वेज-नॉनवेज होती है लेकिन व्यवस्था गत मजबूरी के कारण हमें वह करना होती है उस स्थिति मे अगर हम अपना अलग से वेज हलवाई, बर्तन आदि ले जाकर अलग से पूरा भोजन बनाये और अलग बर्तनों में ही सर्व करें तो कोई बाधा....?

उ. जहाँ तक संभव हो इसे नहीं करना चाहिए किन्तु कोई उचित ऑप्शन अगर उपलब्ध नहीं है और मजबूरी में ऐसा करना पढ़े तो किसी भी परिस्थिति में वहाँ का किचन बर्तन या अन्य कोई भी सामग्री का उपयोग कदापि ना करें तथा किसी भी प्रकार कि रेस्टोरेंट सेवा नहीं ले।

प्र. दादा जी की मृत्यु की स्थिति में उत्क्रांती परिवर की क्या स्थिति रहेगी।

उ. इस स्थिति में उतराधिकारी पुत्र या मुखिया पर उत्क्रांति के नियम लागू होंगे। आगे की पीढ़ी पर नियम लागू करने हेतु चोका अनुसार उत्क्रांति फॉर्म भराया जाना उचित रहेगा।

प्र. मेरा बच्चा अभी छोटा हे, मैं क्यों फार्म भरूं, जिस दिन काम पड़ेगा तब विचार करके निर्णय करूंगा।

---

रूढ़ परंपराओं या कुरीतियों का निर्वाह दंभी और निहित स्वार्थी इस लिये करते हैं कि उनके माध्यम से सार्वजनिक जीवन में वे अपनी झूठी प्रतिष्ठा बनाए रखते हैं। (आत्म-समीक्षण)

– आचार्य श्री नानेश

उ. अभी फार्म भरने के बहुत से कारण हैं।

1. हमारे आराध्यदेव का इशारा है कि 2020 के पूर्व सभी फार्म भर दें।
2. जिस तरह आम का पेड़ आज लगाएं तब कहीं जाकर वर्षों बाद हमें आम खाने मिलता है। इसी तरह जब इन फिजूलखर्च और कुरीतियों के खिलाफ समान विचार वाले व्यक्ति लामबंद होंगे तभी उसका असर आपके बच्चों के विवाह के समय आने पर देखने को मिलेगा।
3. जैन सिद्धांतों के अनुसार जो पाप हम आज नहीं भी कर रहे हैं पर उसका संकल्प नहीं लिया है ताो कुछ ना कुछ अंशों में हमें पाप लगता ही है इसी तरह हम 12 नियम का संकल्प ले कर पहाड़ जैसे पाप को राई भर कर सकते हैं।
4. फार्म भरने से हमारे बच्चों व हमारी भी मानसिकता उसी दिशा में आगे बढेगी और समय आने पर हमारा संकल्प और भी दृढ रहेगा।
5. समाज सुधार की दिशा में और गुरु समर्पणा की दिशा में उठाया गया हमारा यह कदम हमारी अच्छी पहचान समाज में बनाएगा।

प्र. क्या नाच–गान पर पूर्ण रोक है।

उ. अश्लीलता फूहड़ता भरे डांस सड़क व सामान्य जन के सामने नाच–गाना वर्जित है। परन्तु बिंदोली निकलने वाले स्थान व तोरण वाले स्थान पर डांस करना पाबंदी नहीं। बशर्त विवेवपूर्ण व मर्यादित्त हो।

## कुछ अनुभव

प्र. ऐसे कितने परिवार हैं जिन्होंने शादियों में अपनी क्षमता से अधिक खर्च करने के कारण कर्ज लिया, अपनी सम्पत्ति बेच दी और जीवन भर ब्याज चुकाते–चुकाते अपनी व परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं को भी पूरा नहीं कर पाए। समाज के इस वर्ग की चिंता किसी को नहीं ? क्या हमारे भाई इस तरह कर्ज में डूब जाएं और हम चुपचाप तमाशा देखते रहें ? पूरी जिम्मेदारी सम्पन्न वर्ग की है, वे आएं कुछ त्याग करें, ऐसे उदाहरण समाज में प्रस्तुत करें। ताकि

समता साधक को सदा अनासक्त भाव का अभ्यास करना चाहिये ऐसा करने से प्राप्त सत्ता या संपत्ति के दुरूपयोग की मनोवृत्ति नहीं बनेगी तथा कर्तव्य पालन के प्रति जागरूकता निरंतर बनी रहेगी। (आत्म–समीक्षण)

– आचार्य श्री नानेश

'लोग क्या कहेंगे ?' के डर से वे बाहर निकल पाएं और अनावश्यक खर्चों, कुरीतियों और आडम्बरों को तिलांजली दे पाएं।

हालाकि बहुत से परिवारों ने इन 2 वर्षों में उत्क्रांति का फार्म भरकर अथाह धन सम्पत्ति होते हुए भी अपने बच्चों की शादियाँ सादगी से की है। उनका जितना भी बहुमान किया जाए कम है । एक-एक के नाम का उल्लेख करना यहां संभव नहीं है ।

उ. एक सज्जन आए उन्होंने अपना अनुभव बताया कि हमारे घर इन दिनों और भी शादियाँ हुई पर इस शादी में उत्क्रांति का पालन किया तो ऐसा लगा कि सिर पर से कोई बोझ हट गया। पूरे कार्यक्रम में संगीत संध्या और रिशेप्सन के मीनू का इतना तनाव होता था कि समझ में ही नहीं आता था कौन आया कौन गया। हमारे ही आयोजन में क्या भोजन बना कैसा बना ये भी नहीं पता लगता था। खाने का समय ही नहीं होता था। इस बार इत्मीनान से लोगों से मिला उनके साथ ही भोजन किया और समस्त मांगलिक कार्यक्रमों में उपस्थित रहा। आगंतुकों ने भी काफी सराहना की। खाने के आइटम कम होने से उनकी क्वालिटी पर भी कंट्रोल था और फेंकने में भी कम गया।

प्र. मेरे एक मित्र की लड़की की शादी में आजकल प्रचलन में आए इलेक्ट्रानिक आतिशबाजी के दौरान रिमोट में विस्फोट हो गया और उसके छर्रे दुल्हे की आँख में घुस गए। जिस समय उनका फेरा होना था दुल्हा आई.सी.यू. में था। बाद में आँख का आपरेशन करना पड़ा।

उ. मेरे एक रिश्तेदार ने संगीत संध्या में नृत्य की तैयारी की, उन्हें नृत्य समाप्त होने के बाद मंच से नीचे कूदने का अभ्यास कराया गया था। जहां आयोजन था वहां मंच की ऊंचाई काफी अधिक थी जिसका उन्हें ध्यान नहीं रहा और कूद्ने पर एड़ी की हड्डीयाँ टूट गई, आपरेशन कराने के बाद कई दिन बिस्तर पर रहना पड़ा।

इन मांगलिक कार्यक्रमों को हम किसी फिल्म का ट्रेलर, कोई स्टंट शो, कोई सर्कस क्यों बनाना चाहते हैं । हम क्या हैं और क्या दिखाना चाहते हैं। मनोरंजन के लिये हमारे पास बहुत से विकल्प हैं, इन आयोजनों की गरिमा इवेंट मैनेजर, कैटरर्स, डेकोरेटर्स और कोरियोग्राफर्स के हाथों सौंप कर खत्म न करें। अपना विवेक जागृत रखें 'होड़ाहोड़ गोडा फोड़' की कहावत को चरितार्थ न करें।

# संभावित 31 व्यंजनों की सूची

| क्र.सं. | व्यंजनों के नाम | व्यंजनों की संख्या | मान्य संख्या |
|---|---|---|---|
| 1. | सूप | 1+1 | 1 |
| 2. | सलाद | 5 | 1 |
| 3. | अचार, चटनी, नींबू, सोस | – | 1 |
| 4. | मिठाई | लापसी+4 | 4 |
| 5. | नमकीन | 1 | 1 |
| 6. | दही बड़ा, चटनी, कचोरी चटनी | 1+1+1 | 3 |
| 7. | रोटी (घी और गुड़) | 1+1+1+1 | 1 |
| 8. | सब्जी/सांभर | 1+1+1+1 | 4 |
| 9. | दाल/रसम | 1+1 | 2 |
| 10. | चावल/दही चावल/खिचड़ी | 1+1+1 | 3 |
| 11. | पापड़/सलेवड़ा/चिप्स | 1+1 | 1 |
| 12. | चाट मसाला | 1+1+1 | 3 |
| 13. | साउथ इंडियन आईटम | 1+1+1 | 3 |
| 14. | फल–फ्रूट | 6 | 1 |
| 15. | आईसक्रीम | 1+1+1 | 1 |
| 16. | ज्यूस, कॉफी | 1 | 1 |
| | पानी अलग से रहेगा | | 31 |

आप अपने सुविधानुसार व्यंजनों की संख्या में परिवर्तन कर सकते हैं।

कुल व्यंजनों की संख्या 31+पानी रहेगा।

दूध जलेबी/दही बड़ा/दही चटनी मसाला/पानी पूरी में पानी/मसाला इटली के साथ सांभर एवं केवल दो तरह की चटनी ये सभी एक–एक ही संख्या में गिने जायेंगे मिठाई में लापसी काउंट नहीं है।

नम्बर 1. 2. 3. 7. 11. 14. 15. विभाजित व्यंजन वर्ग हैं। इनके अन्तर्गत आने वाली संख्या में कमी करके अतिरिक्त मान्य व्यंजनों की संख्या नहीं बढ़ा सकते हैं। जैसे 6 फ्रूट्स में से एक कम करके अतिरिक्त व्यंजन नहीं बढ़ा सकते हैं।

# उपसंहार

'उत्क्रांति' का अब तक का सफर हर तरह के अनुभव दे गया। न सिर्फ साधुमार्गी संघ अपितु सकल जैन संघ के प्रतिनिधियों ने इसे सराहा और इसमें रूचि दिखाई। जहां तक कि दीगर समाज जैसे अग्रवाल समाज, माहेश्वरी समाज, सिंधी समाज आदि के प्रतिनिधी मंडल भी औपचारिक-अनौपचारिक रूप से हमारी कार्य शैली और इसके परिणामों के बारे में जानकारी लेने आए। बहुत से लोगों ने फोन करके बताया कि किस तरह उत्क्रांति से विवाह करने पर वे तनाव से बचे और संतोष का अनुभव हुआ।

दूसरी ओर चकाचौंध से प्रभावित वर्ग ने टांग खींचने में भी कोई कमी नहीं रखी। उन्होंने स्वयं तो फार्म भरा नहीं और हमें हतोत्साहित करने कहने लगे, 'आपका आंदोलन सफल नहीं हो सकता' 'ये तो केवल वो लोग ही अपना रहे है जो सक्षम नहीं है' आदि आदि। जब गुरुदेव तक ये बातें पहुंचाई गई तब उन्होंने फरमाया लोग तो कहते हैं कि जिन्हें खाने को नहीं मिलता, वे साधु बन जाते हैं। इन सब बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है, और न ही निराश होने की जरूरत।

यथार्थ में ऐसे सकारात्मक दृष्टिकोण से भरे हुए नेतृत्व को पाकर हम सभी की उर्जा कई गुना बढ़ जाती है और आज असंभव लगने वाले लक्ष्य को भी हम कुछ संघर्ष करके पा लेते हैं। इसी तरह 'पावर हाऊस' से ऊर्जा का संचार होता रहे, जिसके सहारे हम सभी कंधे से कंधा मिलाकर हर उन सामाजिक बुराइयों को उखाड़ फेकेंगे जो समाज के लिये घातक है। ऐसा दृढ़ विश्वास है।

## उत्क्रांति ग्राम बनाने के नियम

1. ग्राम/शहर में जितने भी साधुमार्गी परिवार है, उन सभी द्वारा (शत प्रतिशत) उत्क्रान्ति फॉर्म भरने पर।
2. अगर किसी ग्राम/शहर में साधुमार्गी परिवार नहीं है तो वहाँ के सभी जैन परिवारों द्वारा (सभी पंथों के) उत्क्रांति फॉर्म भरने पर।
3. सभी परिवारों द्वारा उत्क्रान्ति फॉर्म भरने के पश्चात् एक उत्क्रांति ग्राम परिचय-पत्र भी भरना होगा (फार्मेट सभी जगह उपलब्ध है) जिसे वहाँ के संघ अध्यक्ष/मंत्री/प्रमुखों द्वारा हस्ताक्षरित किया जाएगा, संघ ना होने की दृष्टि में वरिष्ठ श्रावकों द्वारा हस्ताक्षरित होगा।
4. यह प्रक्रिया पूरी होने के पश्चात् सभी उत्क्रांति फॉर्म एवं उत्क्रांति ग्राम घोषणा पत्र (परिचय पत्र), समता युवा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, उत्क्रांति के राष्ट्रीय संयोजक अथवा बीकानेर कार्यालय पर पहुँचाना रहेंगे, प्रक्रिया का पालन करने एवं निश्चित स्थान पर फार्म पहुचने के पश्चात् ही उत्क्रांति ग्राम/शहर की अधिकृत घोषणा की जाती है।

।। श्री महावारीय नमः ।।

।। जय गुरू नाना ।। ।। जय गुरू राम ।।

# संकल्प पत्र

नाम .....

पिता का नाम .....

अविवाहित युवक / युवती (संख्या) .....

उम्र ..... संपर्क .....

ई-मेल .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... जिला .....

राज्य ..... अंचल .....

संबंधित स्थानीय संघ का नाम .....

.....

**मैं और मेरा परिवार "उत्क्रान्ति" के 12 (बारह) नियम का पालन करने के लिए संकल्पित हैं।**

दिनांक : .....

हस्ताक्षर

रुढि त्यागें, मिटना क्लेश। उत्क्रांति का है संदेश।
उत्क्रांति का है शंखनाद, नहीं दिखावा आज के बाद।।

॥ जय गुरु नाना॥ ॥ जय महावीर॥ ॥ जय गुरु राम॥

# श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

## उत्क्रांति ग्राम/शहर परिचय

ग्राम/शहर का नाम:.....तहसील/तालुका:.....

जिला :.....राज्य:.....पिन कॉर्ड:.....

अंचल :.....

कुल साधुमार्गी परिवार :..... जैन परिवार :.....

(साधुमार्गी परिवारों की सूत्रि सम्पर्क सूत्र सहित संलग्न करावें)

1. ..... 2. .....

..... .....

..... .....

..... .....

..... .....

हमारे ग्राम/शहर के प्रत्येक सदस्य ने उत्क्रांति के आह्वान को समझ लिया हैं तथा प्रत्येक साधुमार्गी परिवार के सभी सदस्यों ने सहमति दी है। अत: हमारे ग्राम/शहर की उत्क्रांति ग्राम/शहर समझा जावें।

स्थान :..... दिनांक :.....

| अध्यक्ष | मंत्री | कोषाध्यक्ष |
|---|---|---|
| (स्थानीय संघ) | (.....) | (.....) |

अलौकिक ज्ञान की मशाल जलाएं, मिटाकर अज्ञान की भ्रान्ति।
उपयोग.विवेक और यतना का, जीवन.संकल्प भरे उत्क्रान्ति।।

# श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ


## श्री हितेश विद्याभंवर जी सिपानी

**राष्ट्रीय संयोजक - उत्क्रांति**

303, R.D. High Rise, Opp. D.K.Park, Near Rupali Naher,
Bhatar Road, Surat -395007 (Gujarat)
e-mail : hiteshsipani8185@gmail.com
M. 9374689000


## प्रादेशिक संयोजक - उत्क्रान्ति


**मारवाड़ अंचल**
**श्री राकेश सांखला**
Rakesh Telecome, Private Bus Stand
Balesar, Dist. Jodhpur -342023 (Raj)
M. 9828923248
e-mail : rakeshsankhlabalesar@gmail.com

**मेवाड़ अंचल**
**श्री सुशील नाहर**
Nahar Electricals & Machineries
State Bank Road, Old Bus Stand,
Begun, Distt. Chittorgarh - 312023 (Raj.)
M. 9414731166
e-mail : nahar.electricals@gmail.com

**जयपुर, ब्यावर, दिल्ली अंचल**
**श्री राजेश लुणावत**
Shyam Electricals
1/1 Nai Basti,
Behind Jaihind Ice Fectory,
Kishanganj, Delhi M. 9811883360
e-mail : rajeshlunawat1975@gmail.com

**पूर्वोत्तर, नेपाल, बिहार, भूटान, अंचल**
**श्री संजय पारख**
Chitra Garments
Shop No. 6, Ground Floor, Amar Point
Near Jain Mandir, Rly. Gate No. 3,
S.R.C.B. Road, Fancy Bazar, Guwahati-
781001 (Assam) M. 9435405115
e-mail : sanjayaparakh22@gmail.com

**मालवा अंचल**
**डॉ. श्री नितिन तांतेड़**
4, Girdhar Nagar
Mahesh Nagar, Indore (M.P.)
M. 999 3955371
e-mail : shwenit@gmail.com

**मु. गुजरात, महाराष्ट्र, खानदेश अंचल**
**श्री मनीष बोथरा**
Plot No. 27, Bhagwan Mahavir Park
Opp. Good Shephard School, Eravdol Road,
Post- Dharangaon Dist.Jalgaon-425105
(Mah.) M. 8379972200
e-mail : manishkumar.bothra@rediffmial.com

**छत्तीसगढ़, ओडिसा महाकौशल अंचल**
**श्री अंकित गुणधर**
Jainam Sarees
Opp. Punjab National Bank
Post : Dallirajhara, Dist. : Balod (C.G.)
M. 9755685556
e-mail : ankitgundhar@icloud.com

**कर्नाटक, आंध्रप्रेदश, तमिलनाडू अंचल**
**श्री नवीन बोहरा**
7th P.V. Koil Street, Royalpuram
Chennai-600013 (T.N.)
M. 9841964096
e-mail : naveen_nvd123@yahoo.co.in

।। जय गुरु नाना ।। ।। श्री महावीराय नमः ।। ।। जय गुरु राम ।।

# SIPANI
MARBLES

•STRONG • STYLISH • SOPHISTICATED

शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, आचार्य–प्रवर
1008 श्री रामलालजी म.सा. के चरणों में कोटि कोटि वंदन

## श्रद्धावनत

श्रीमती जेठी देवी, विमल-कुमुद, सुनील-श्रद्धा, पुनीत,
यस्मिता, जयवर्धन एवं समस्त सिपाणी परिवार
उदयरामसर/बैंगलोर

We bring to you exquisite marbles with a hoard of exempary features, Sipani Marbles is set to make your dream home, a dream come true. Our marbles are crafted using our state-of the art SSS process (Stone Strengthening System) & are fully reinforced on the world's argest Hi-Tech processing line to create a strong, unbreakable product for you.

+91- 9900022355
sales@sipanisoftstones.com

Sipani Soft Stones PVT LTD
Bangalore & Krishnagiri

Print by : Tilok Printing Press#9314962474/75